By, Sujeet Kr. Suman
R. N. College
(Hajipur

अर्थशास्त्र की परिभाषा
(Deffinitions of Economics)

* विकास संबंधित परिभाषाएँ
(Deffinition Related to Growth)

अर्थशास्त्र की 'दुर्लभता' दृष्टिकोण संबंधित परिभाषाओं पर एक महत्वपूर्ण सुधार प्रो० सैम्युलसन द्वारा किया गया है। उनके अनुसार, " अर्थशास्त्र इस बात का अध्ययन करता है कि व्यक्ति तथा समाज, मौद्रिक अर्थव्यवस्था अथवा विनिमय प्रणाली में, विभिन्न वस्तुओं के समयागत उत्पादन के लिए सीमित उत्पादक संसाधनों के उपयोग का किस प्रकार चुनाव करते हैं और समाज के विभिन्न लोगों तथा समूहों के बीच, उनके वर्तमान तथा भविष्य में उपभोग के लिए किस प्रकार वितरण करते हैं।"

(Economics is the science of how a particular society solves its economic problems. An economic problem exists whenever scarce means are used to satisfy alternative ends." (Milton Fridman)

प्रो० सैम्युलसन द्वारा दी गई परिभाषा की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने विकासवादी दृष्टिकोण अपनाकर उसे स्थैतिक के स्थान पर गतिशील बनाने का सफल प्रयास किया है।

* अन्य परिभाषाएँ
(other Deffinitions

अर्थशास्त्र की परिभाषा देने में प्रो० जे० के० मेहता ने गाँधीवादी दृष्टिकोण— सादा जीवन उच्च विचार को आधार बनाया है। उन्होंने मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य सुख को माना है, भारतीय दर्शन व संस्कृति के अनुरूप प्रो० मेहता ने अर्थशास्त्र को परिभाषित किया है —" अर्थशास्त्र एक विज्ञान है जिसमें मानव के उस व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जिससे आवश्यकता विहीनता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।"

("Economics is a science that studies human behaviour as a means to the end of wantlessness.") — J.K. Mehta

प्रो० मेहता का दृष्टिकोण यह है कि अर्थशास्त्र के अध्ययन का लक्ष्य आवश्यकताओं का संख्यावर्द्धन नहीं बल्कि उनके न्यूनतम का होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

* दुर्लभता / वैज्ञानिक परिभाषाएँ
Definition Related scarcity & scientific)

दुर्लभता संबंधि परिभाषा को प्रतिपादित करने का श्रेय लंदन स्कूल के प्रो॰ रॉबिन्स को जाता है। रॉबिन्स ने आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं के विभेद को अस्वीकार करते हुए यह विचार व्यक्त किया कि जैसे ही मनुष्य के साधन उसके लक्ष्यों की तुलना में कम पड़ जाते हैं, आर्थिक समस्या तुरन्त उत्पन्न हो जाती है जिसमें मनुष्य असीमित लक्ष्यों का सीमित साधनों से संबंध स्थापित करने के लिए प्रयत्न करता है। यह मानव व्यवहार की एक सर्वव्यापी सामान्य दशा है जो कि समय की हर परिस्थिति में उत्पन्न होती रहती है।

1932 ई॰ में प्रो॰ रॉबिन्स की प्रसिद्ध पुस्तक 'An essay on the nature and significance of Economic science' प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार से की है — "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो लक्ष्यों एवं वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों के परस्पर संबंधों के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।"

("Economics is the science which studies human behaviour as a relationship between ends and scarce means which have alternative uses.")

In other words, "Economics is a study of human behaviour."

"अर्थशास्त्र मानव के आचरण का अध्ययन करता है।"

रॉबिन्स द्वारा प्रतिपादित उपर्युक्त परिभाषा में निम्नलिखित महत्वपूर्ण तथ्य सम्मिलित हैं —

(i) मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त एवं असीमित होती हैं।
(Unlimited wants of human beings)

(ii) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सीमित साधन उपलब्ध होते हैं।
(Limited resources to satisfy unlimited wants)

(iii) उपलब्ध सीमित साधनों के वैकल्पिक प्रयोग संभव होते हैं।
(Alternative uses of resources)

(iv) विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति की तीव्रता भिन्न-भिन्न होती है। मनुष्य अपने सीमित साधनों से अपनी तीव्र आवश्यकताओं की पूर्ति पहले करता है।

(P.T.O)

Scanned with CamScanner

इस प्रकार रॉबिन्स के विचार में अर्थशास्त्र मानव व्यवहार का इस दृष्टिकोण से अध्ययन करता है कि मनुष्य किस प्रकार अपनी असीमित आवश्यकताओं को सीमित साधनों द्वारा पूरा करने का प्रयास करता है।

* रॉबिन्स की परिभाषाओं की कुछ विशेषताएँ निम्न हैं —

(i) अर्थशास्त्र का व्यापक एवं विस्तृत क्षेत्र → रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को व्यापक एवं विस्तृत बना दिया है। इनके अनुसार मनुष्य के सभी आचरणों तथा सभी प्रकार के मनुष्य के आचरण अर्थशास्त्र के अन्तर्गत आते हैं। इसमें सामाजिक आचरण पर से जोर हटाकर मानव - आचरण पर अधिक जोर दिया गया है।

(ii) अर्थशास्त्र केवल वास्तविक विज्ञान है → रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को केवल एक वास्तविक विज्ञान माना है। इनके अनुसार किसी अर्थशास्त्री का काम किसी साधन की अच्छाई, बुराई पर किसी प्रकार का निर्णय या टिप्पणी देना नहीं है बल्कि यथावत रूप में अध्ययन करना है, अर्थात् अर्थशास्त्र उद्देश्यों अथवा आदर्शों के बीच तटस्थ रहता है।

(iii) रॉबिन्स की परिभाषा विश्लेषणात्मक है → रॉबिन्स की परिभाषा श्रेणी विभाजक न होकर विश्लेषणात्मक है। रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र को आर्थिक और गैर आर्थिक, भौतिक - अभौतिक के वाद - विवादों से मुक्त किया कराया है। इनके अनुसार अर्थशास्त्र में प्रत्येक व्यक्ति के केवल आर्थिक पहलू का अध्ययन किया जाता है।

(iv) अर्थशास्त्र, चुनाव के विज्ञान के रूप में → रॉबिन्स के अनुसार, अर्थशास्त्र चुनाव का विज्ञान है। जब सीमित साधनों द्वारा असीमित लक्ष्यों की पूर्ति सम्बन्धित समस्या उत्पन्न होती है, तब इस समस्या का समाधान चुनाव की प्रक्रिया के द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता है।

* आलोचना

यद्यपि सैद्धांतिक और तार्किक दृष्टि से रॉबिन्स की परिभाषा श्रेष्ठ प्रतीत होती है क्योंकि इसमें विषय का बड़े वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया गया है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से इसमें कुछ त्रुटियाँ भी मालूम होती हैं। इनकी परिभाषाओं की आलोचनाएँ निम्न हैं —

Scanned with CamScanner

(i) अर्थशास्त्र के क्षेत्र को बहुत अधिक व्यापक बना दिया है — पीगू ने आर्थिक विवेचन में निश्चितता और व्यावहारिकता लाने हेतु साधन में केवल उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं को सम्मिलित किया है, जिसका मूल्यांकन द्रव्य से किया जा सके। किंतु रॉबिन्स ने बताया कि सीमित साधनों का द्रव्य से संबंध आवश्यक नहीं है। अतः द्रव्य के मापदण्ड को त्याग कर रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को अनिश्चित और व्यापक बना दिया है।

(ii) मानव कल्याण की उपेक्षा → रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति तटस्थ है। अतः परिभाषा से ऐसा लगता है कि मानो अर्थशास्त्र का मानव जीवन से सरोकार ही नहीं है। दूसरे शब्दों में उनके अनुसार अर्थशास्त्री को मानव जीवन की भलाई और बुराई से कोई संबंध नहीं होना चाहिए, जबकि आधुनिक युग में अर्थशास्त्र का उद्देश्य मानव जीवन का हित व कल्याण ही माना जाता है।

(iii) सीमित एवं वैकल्पिक बातों का अनावश्यक प्रयोग → आलोचकों का मत है कि यह तो सर्वविदित है कि मनुष्य के पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु सीमित साधन होते हैं तथा इन साधनों को कई प्रयोगों में लाया जा सकता है।

(iv) केवल निगमन प्रणाली का प्रयोग → आलोचको का कथन है कि रॉबिन्स ने अर्थशास्त्र के अध्ययन में केवल निगमन प्रणाली के प्रयोग को ही वांछनीय ठहराया है, जबकि अर्थशास्त्र में वास्तविकता लाने हेतु आगमन प्रणाली का उपयोग भी उतना ही अधिक आवश्यक है।

(v) मानव व्यवहार की त्रुटिपूर्ण कल्पना → रॉबिन्स ने मानव व्यवहार को विवेकशील मानकर यह धारणा बनाई कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी असीमित आवश्यकताओं पर सीमित साधनों का बँटवारा इस प्रकार से करता है कि उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके।

(vi) अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति निरपेक्ष तथा तटस्थ है → रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्री का कर्तव्य खोज और व्याख्या करना है, समर्थन या निंदा करना नहीं, अर्थात् अर्थशास्त्र उद्देश्यों के प्रति तटस्थ है तथा अर्थशास्त्री का उद्देश्यों की अच्छाई या बुराई से कोई संबंध नहीं है क्योंकि यदि वह ऐसा करता है तो नीतिशास्त्र के क्षेत्र में पहुँच जाता है जबकि अर्थशास्त्र केवल मात्र वास्तविक विज्ञान है।

Scanned with CamScanner